Review of Research

UGC APPROVED

International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 6 | Issue - 12 | September - 2017

5.2331(UIF) 2249-894X

अंचल जी के काव्य की शिल्पगत विवेचना

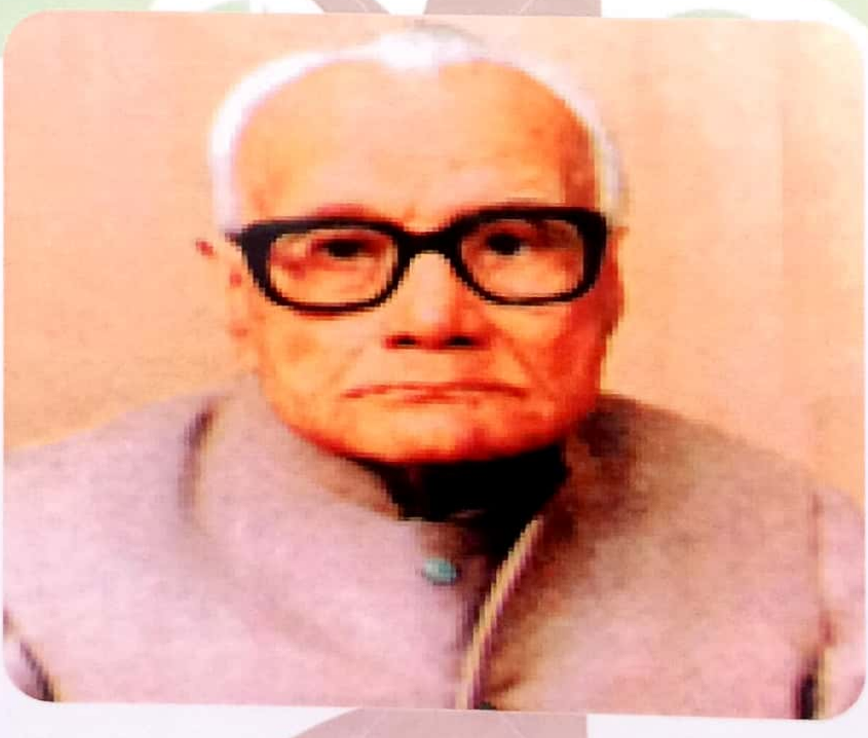

डॉ. नीता सिंह

नीता सिंह

हिंदी विभागाध्यक्ष , श्री. बिंझाणी नगर, महाविद्यालय, उमरेड रोड, नागपुर.

सारांश :– कवि के सौंदर्य बोध की परिचायिका शिल्प सौंदर्य हैं अर्थात उसका कलापक्ष हैं। कवि, प्रकृति और जीवन से प्रेरणा और सामग्री लेता है और अपनी कल्पना के द्वारा रचना की विशेष प्रक्रिया से पार होकर उसे काव्य के रुप में प्रस्तुत कर देता हैं। इस ... पृष्ठ क्र.– 33

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

Scanned with CamScanner

International Online Multidisciplinary Journal

Review of Research

Save Tree, Save Paper, Save World

ISSN NO:- 2249-894X Impact Factor : 5.2331(UIF) Vol.- 6, Issue - 12, September-2017

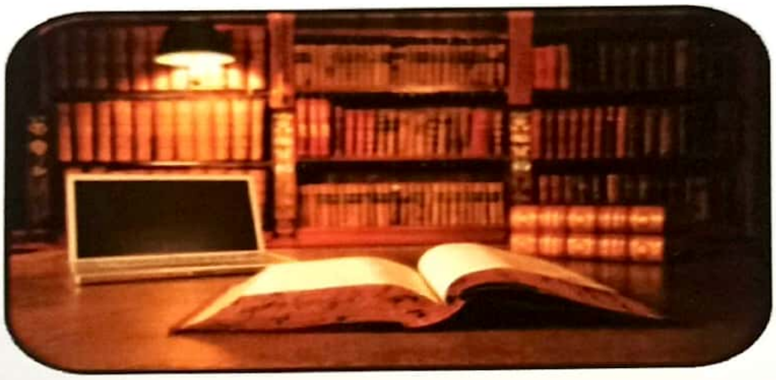

Sr. No	Title And Name Of The Author (S)	Page No
1	जलालुदीन फिरोज खिलजी के शासन काल में मलिक छज्जू का विद्रोह: कारण एवम् प्रभाव (Aug – Sep 1290 ई.) डॉ. नीरज कुमार गौड़	1
2	वामनदादा कर्डकांच्या राष्ट्रकाव्यातील राष्ट्रीय जाणिवा आणि राष्ट्रप्रेम प्रा. डॉ. युवराज श्री. मानकर	5
3	बिरसा मुण्डा के विशेष संदर्भ में मुण्डा जनजाति का सामाजिक-सांस्कृतिक योगदान डॉ. यादव गुजर , श्रीमती अंजु ए. शरण	13
4	उत्तराखण्ड प्रदेश के नगरीकरण सन्दर्भ में जनपद रुद्रप्रयाग का विशेष डॉ. गुरूप्रसाद थपलियाल , प्रमोद सिह रावत	16
5	प्रगत शेती आणि शेतकऱ्यांचे अधिकार : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन संदर्भ : मराठवाडा विभाग गायकवाड गौतम संभाजी	23
6	कामायानी का महाप्रेरक उद्येश्य Renu Bala D/o Prem Kumar	25
7	बड़वानी जिले में कपास उत्पादन का विश्लेषणात्मक अध्ययन डॉ. विजय ग्रेवाल , रेखा पंवार	28
8	अंचल जी के काव्य की शिल्पगत विवेचना डॉ. नीता सिंह	33

Scanned with CamScanner

9	**AN OVERVIEW OF CONVENTIONAL TRUTH AND ULTIMATE TRUTH** **Ariyavamsa**	44
10	**ಸರಕು ಮತ್ತು ಸೇವಾ ತೆರಿಗೆ: ಲಕ್ಷಣಗಳು, ಲಾಭಗಳು ಮತ್ತು ಅನಾನುಕೂಲಗಳು** **ಡಾ. ನಾರಾಯಣ ಅರುಂದೇಕರ[1] , ಡಾ. ಚಂದ್ರಪ್ರಭಾ ಎಮ್. ಪಟಗಾರ[2] , ವಿಶ್ವನಾಥ ವಿ. ಕಲ್ಮೇಶ್ವರ[3]**	50
11	**TRAVEL WRITER AS A REFORMER: REPRESENTATION OF SOCIAL ISSUES IN V.S NAIPAUL'S *AN AREA OF DARKNESS*** **Dr. Sonal Sharma**	53
12	**REMOVAL OF GREEN-B DYE USING SAW DUST AS AN ADSORBENT** **Nimkar D. A.**	57
13	**रोकडविरहित अर्थव्यवस्था / समाज - फायदे व तोटे** **प्रा. डॉ. सुरेश दगडू पाटील**	65

Scanned with CamScanner

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

अंचल जी के काव्य की शिल्पगत विवेचना

डॉ. नीता सिंह
हिंदी विभागाध्यक्ष , श्री. बिंझाणी नगर, महाविद्यालय, उमरेड रोड, नागपुर.

प्रस्तावना :

कवि के सौंदर्य बोध की परिचायिका शिल्प सौंदर्य हैं अर्थात उसका कलापक्ष हैं। कवि, प्रकृति और जीवन से प्रेरणा और सामग्री लेता है और अपनी कल्पना के द्वारा रचना की विशेष प्रक्रिया से पार होकर उसे काव्य के रुप में प्रस्तुत कर देता हैं। इस प्रकार प्रकृति और जीवन के स्थूल उपादानों की, रचना प्रक्रिया में ढलकर जो अमृर्त, संवेदनात्मक सृष्टि होती है, वही कला है। कला अपनी मूल सामग्री से पर्याप्त परिवर्तित रुप में उपस्थित होती है। इस परिवर्तन में ही वह सौंदर्य उत्पन्न होता है — जिसकी सृष्टि उच्चकोटि के आनंद प्राप्ति के लिए विविध कलाएँ करती हैं। मूर्तिकला, चित्रकला, सादि से संगीतकला और काव्यकला में यह सौंदर्य अधिक परिष्कृत, सुक्ष्म और गहन होता है क्योंकी ये दोनों कलायें चाक्षु माध्यम से नहीं अपितु श्रवण और भावन से ही आस्वाद्य होते है। काव्य का माध्यम शब्द—प्रतीक मात्र होने से वह ललित कलाओं में सर्वाधिक सूक्ष्म व श्रेष्ठ माना जाता है। अत: इस दृष्टि से कवि कर्म अपेक्षाकृत महत्तर हो जाता है कि प्रकृति व जीवन से गृहीत उपादानों से वह कला—सौंदर्य उत्पन्न करें। काव्य मानसिक प्रतीति का विषय है। शब्दों में अन्तर्निहित चित्र या बिम्ब पाठक या श्रेता के श्रावना—पटल पर प्रतिबिम्बित होकर उसे भावमग्न कर देते हैं। काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह हैं कि जो वस्तु व्यापार प्रत्यक्ष जगत में हमें प्राय: प्रभावित नहीं करते वे ही काव्य में चित्रित होकर हमें तुंरत रसमग्न कर सकते हैं। काव्य की इस अपरिसीम शक्ति का रहस्य है कल्पना। कल्पना ही वह तत्व है जो अनुभूति को रचना का रुप देती है। इसीलिए कल्पना को साहित्य की सृजन शक्ति कहा गया है।

"जिस प्रकार ब्रहम् माया के माध्यम से अखिल विश्व की सृष्टि करता है, उसी प्रकार प्रतिभा सम्पन्न लेखक या कवि, कल्पना के सहारे साहित्य में सौंदर्य की सृष्टि कता हैं।"[१] कल्पना जीवन के सत्य एवं प्रकृति के नियमों से संबंध रखती है। कल्पना काव्य रचना में रुप संघटन ही नहीं करती अपितु कवि के व्यक्तित्व और उसकी शैली का निर्माण भी करती है। कल्पना को भारतीय दर्शन में "निर्माण क्षमत्वम्" कहा गया है और इसी को एडीसन ने Esemplasy कहा है। अनुभूति शून्य कल्पना आकांशा में महल बनाने के समान हैं। अंचल इस तथ्य को स्वीकार करते हैं — "काव्यत्मक सृजन में कल्पना को अनुभूति की मुखापेक्षी मानता हूँ। यदि अनुभुति में तीव्रता और व्यापकता होती तो उसका श्रृंगार करने वाली उदात्त और विराट, स्पन्दनशीला और प्राणवती होगी नही तो वह केवल रुढिगत और सांप के व्यक्त केंचुल जैसी विष्प्राण होगी।"[२] अंचल के काव्य की चित्रमयता, बिंबग्राहिता, सम्प्रेषणीयता के लिए उनकी कल्पना उत्तरदायी है, और उनके कथ्य को प्राणवत्ता, स्पन्दनशीलता, संवेदना और गहराई का क्षेत्र उनकी अनुभूति कह सघनता को दिया जा सकता हैं।"[३] अंचल लिखते हैं — कलावान के अलंकरणों को मानते हुए भी मैने सदैव काव्य में अनुभूति के घनत्व को महत्व दिया है।" "कवि स्मृतियों का गायक हैं।"[४]

अत: उनकी कल्पनाशक्ति पर्याप्त उर्वर है। अनुभूति और कल्पना के सन्तुलित समन्वय से उत्पन्न यह कलागत सौंदर्य भारतीय साहित्य शास्त्र के सभी सम्प्रदायों में समान भाव से प्रतिष्ठित हैं। काव्य में कवि, बिम्ब व प्रतीक के माध्यम से जो सूक्ष्म और मानसिक सौंदर्यानुभूति को उत्पन्न करता है उसे पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र में Aesthetic experience और भारतीय काव्यशास्त्र में 'रस' के रुप में विवेचित किया गया है।

शब्द—योजना —

अंचल जी ने अपने साहित्य में भावों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए अग्रेंजी, उर्दू, संस्कृत इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया है लेकिन ये शब्द इतने अप्रचलित नहीं हैं कि जो समझ में ना आ सके। उनकी भाषा में उर्दू का अधिक

Scanned with CamScanner

प्रभाव दिखाई देता है। इस उर्दू प्रभाव के कारण भावों में एक तीव्र लाक्षणिकता का समावेश हुआ है। 'सनम' 'सितम', 'नजर', 'दिलदार', 'जिगर', 'अफसाना','तपिश', 'जिगर', 'सफर''पग' आदि उदा. है। जो हमारी बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होने लगे हैं। इनको कविता में लाने से भावों का उत्कर्ष हो जाता हैं और गति में स्वाभाविकता आ जाती है। कवि ने 'क्या कहिए' कविता में अरबी–फारशी शब्दों का जी खोलकर प्रयोग किया है और स्वाभाविकता के साथ किया है जिससे सितम की रातों में मस्तानापन बढ़ गया हैं। फारसी भाषा प्रेमोन्मत शराब के प्याले में मोहक उफान लाने में प्रसिध्द है ही अतः उसने अंचल को भी अपना यह गुण प्रदान किया है।

तभी डॉ. विनयमोहन शर्मा कहते हैं – "अंचल की शब्द योजना सुंदर है, कर्ण मधुर है। शब्द सुनियोजन की दृष्टि से अंचल सौंदर्य की सृष्टि करने वाले एक उच्चकोटि के कवि हैं। शब्द योजना की दृष्टि से अंचल एक सफल कवि है। अंचल जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिये एक हद तक छायावादी कोमलकान्त पदावली को अपनाया है। जैसे – मधु, मद, री, स्वर्णिम, सुरक्षित, यामिनी, प्यास, वन, स्नात, मय, चिर, मधुर, स्वप्निल इत्यादि।

जैसे – "मद उस्यौवन के उभार से
वे विरचंचल स्वप्न किशोर
दिपाराम के करनक जाल में
ज्योति कणों से बिथे विभोर"[५]

तत्सम शब्दों के प्रयोग से अंचल जी के काव्य में सौष्ठव गुण आया है –

जैसे – "उदय निलय के करुण बखान
यौवन के मधुमय आख्यान
मेरे गान, मेरे गान।"[६]

केक का 'कोकी', संदेश का संदेसा, कोयल का कोयलिया, हृदय का 'हिया', सलोना, अंगडाई, बिरवा, विलमती, पिपासा, विलगना, आदि शब्दों का प्रयोग प्रसंगानुकूल हैं। तत्सम् एवं तद्भव शब्दों के प्रयोग के साथ मुहावरों का भी प्रयोग उनकी भाषा का विशेष गुण हैं –

१) "दो दिन का यह वास और फिर
कौन कहाँ होगा क्या जाने" – (मधूलिका, 'सखी')
२) 'तिल–तिल कर' – (विराम–चिन्ह)
३) 'जब पुकार होगी ऊपर से' – (मधूलिका, 'सखी')

कवि ने विशेषणों का भी सार्थक प्रयोग किया है। ये विशेषण भावात्मक सौंदर्य में वृध्दि करने के साथ भावों की प्रेषणीयता तथा चित्रात्मकता देने में भी सहायक हुए है। भावानुकूल शब्द योजना के कारण अंचल के काव्य में गुणों का सुंदर समावेश हुआ हैं।

शैली की सामान्य विशेषताएँ –

कविता में शैली का जितना महत्व भाव को चत्मकारी बनाने के लिए होता है, उतना ही कवि की पहचान के लिए भी। शैली रचनाकार का वैयक्तिक कौशल है जो उसकी अपनी पहचान होती है। हिन्दी साहित्य् जगंत में डॉ. रामेश्वर शुक्ल "अंचल" जी अपनी विशिष्ट शैली के लिए प्रसिध्द हैं। अंचल जी हमेशा अपने मार्ग पर सच्चाई के साथ आगे बढ़ते रहे। इस विद्रोही शैली का, स्वतंत्र शैली का पूर्ण प्रभाव अंचल जी के काव्य–साहित्य में दिखाई देता हैं।

शैली की दृष्टि से विचार करने पर "अंचल" के काव्य–साहित्य में अनेक भावों को लेकर उभरने वाली विविध शैलीयाँ दिखाई देती है। जैसे चित्रात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, उद्बोधनात्मक शैली आदि।

अंचल जी प्रणय, विरह, प्रकृति कही पर भी हो, वे किसी भी बात का वर्णन करते हो तब उनके शब्द एक कुशल चित्रकार के रंगो के समान शब्दचित्र बनकर साकार दिखाई देते हैं। यौवन में यौवन का उन्माद, प्रणय में प्यार का, प्रकृति में श्रृंगार का सुंदर चित्र "अंचल" बनाते है। अपने शब्दों से वस्तु को साकार करने की यह शैली शब्दों के जादूगार अंचल जी के ही बस में दिखाई देती हैं –

जैसे – "मेरे गीतों में भर देती हो अपने मुख की मंदीरा,
छंद–छन्द्र में नुपुर की ध्वनी–कंकण की झंकारगिरा,
तीर्थ–सलिल मुक्ता – अवली – सी प्रभा स्नान तुम सुकुमारी

Scanned with CamScanner

तुम दो व्याकुल फैली बाहों में तन्मय कविता सारी" ("तुम")

वर्णनात्मक शैली में "अंचल" की लम्बी कविताएँ सम्मिलित हैं। जिसमें अंचल जी ने व्यापक रुप में कुछ कहने का प्रयास किया हैं। ऐसी कविताओं में विषय की विविधता जरुर हैं। किंतु एक जिम्मेदार व्यक्ति की भाँति अपने दुःख दर्द को समझाने की वृत्ति "अंचल" उसमें प्रदर्शित करते है। इस दृष्टि से 'सखी', 'मौन' 'भूत मत जाना पंथी', 'कवि का स्वप्न', आदि।

उद्बोधनात्मक शैली में कवि का चिंतन पक्ष उभरा हैं। कवि का समाज, राष्ट्र व्यक्ति के प्रति कुछ कर्तव्य होता है। इसीलिए 'अंचल' ने अपने गीतों के माध्यम से उद्बोधनात्मक शैली में कुछ गीत लिखे हैं। "भले ही 'अंचल' समय की धारा के अनुसार भावनाओं के अनेक पक्ष बहते चले गये। किंतु जीने की लालसा, सिध्दांत व निष्ठा उन्होंने जीवन व साहित्य में कभी नहीं बदली।"[७]

जैसे — "जी रहा हूँ व्रत यही मैं, पी रहा यह टेक,
है मिला विश्वास जीवन में मुझे बस एक
अर्थ शब्दों को मिलेगा और रस को धार
है नहीं मुझको स्वरों की वंदना स्वीकार" **("विश्वास")**

'अंचल' अपने मन के मालिक बन कर रचना करते रहे इसीलिए विविधता पूर्ण में एकता की शैली ने 'अंचल' को हिन्दी साहित्य में अचलस्थान प्रदान किया हैं।

भाषा का स्वरुप —

मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जो भाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकता हैं। इसीलिए उसने इतनी उन्नति की हैं और जानवर हजारों वर्षो से जहाँ के वहाँ ही हैं कारण उनके पास भाषा नहीं है वे बोल नहीं पाते। भाषा के द्वारा ही मनुष्य अपनी अनुभूतियों को व्यक्त कर सकता है। कवि अपनी अनुभूति को भाषा के द्वारा ही अभिव्यक्त कर सकता है। क्यों कि भाषा ही भाव एवं विचारों को वहन करके कवि की, स्वानुभूति को उसके अंर्तजगत से बाह्य जगत में लाती हैं और अपनी अपूर्व क्षमता द्वारा उन्हें सर्वजन सुलभ बनाती है। हृदय के भावों को जन–साधारण की भाषा में उतारना न तो सरल है और न संभव ही है। कवि वर्तमान स्वप्न नहीं देखता वह भविष्य का भी चिंतन करता है। अतः वर्तमान में चलती भाषाा उसके भविष्य को चित्रित करने में असफल हो जाती हैं। हिन्दी के युग प्रवर्तक कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की कविता जनता भी भाषा का रुप कहा जाता है पर यह कथन सर्वथा ठीक नहीं है। डॉ. विनयमोहन शर्मा ने, मधूलिका की भूमिका में स्पष्ट कहा हैं। उनकी खड़ी बोली में 'संस्कृत' शब्दों का उसके तद्भव शब्दो का अत्याधिक प्रयोग है। प्रसाद, पंत, निराला ने भी चलती हुई भाषा को अपने 'हृदय का भार' वहन करने के योग्य नही पाया। नवीन ने प्रांतीय शब्दों का मधुर प्रयोग किया है। सत्य तो यह है कि लोकभाषा और साहित्य–भाषा कभी भी प्रगाढलिंगन नही होने पाया। जीवित भाषा वही रही जो लोकभाषा के साथ रही। 'अंचल की कविता में संस्कृत गर्भित भाषा का प्रमुखता से प्रयोग हुआ है, परंतु उनके भाव संस्कृत शब्दों में उतरने के लिए ही नहीं रुके। उन्होंने प्रचलित उर्दू, अरबी, पारसी शब्दों का भी प्रयोग किया है। जहाँ ब्रजभाषा माधुर्य वृध्दि में सहायक हुई वहाँ उसे भी अंचल ने अपना ने अपना किया हैं। अंचल ने आत्मगत भावों की सरल अभिव्यक्ति की हैं। भाव जिस रुप में उनके हृदय में उत्पन्न होते थे वे उसी रुप में फस्फुटित हो जाते थे। उनके काव्य में सौंदर्य अपने आप प्रतिष्ठित होता था। अतृप्ति, तृष्णा और अन्माद जन्य भावों के वहन के लिए जिस आदेशमयी रस से ओत प्रीत, कसकपूर्व भाषा शैली की आवश्यकता होती थी लगभग वैसी ही भाषा शैली 'अंचल' की सारी कविताओं में दिखाई पड़ती है। अंचल की सबसे बड़ी विशेषता यह हैं कि उनकी अभिव्यक्ति शैली सशक्त हैं। वस्तुतः भावों के क्षेत्र में जिस प्रकार वे किन्ही वादों से बंधकर नहीं चले उसी प्रकार भाषा के क्षेत्र में भी वे न तो द्विवेदी युगीत शुध्दिकरण व पौठ प्रॉजल प्रयोगों के पक्ष में है न छायावादी सूक्ष्मता के आग्रहवश कोमलकांत पदावली में ही रम गये। इसी प्रकार प्रगतिवादी अभिधात्मकता को स्वीकारते हुए भी अंचल ने कविता में राग व लय को महत्व दिया। अंचल का काव्य भाव, विचार बोझिल अथवा सिध्दांत नियामक न होकर सहज मानवीय संवेदनाओं का संप्रेषण करता है। उनकी भाषा भावों का रहन करने में पूर्णतया समर्थ है, सरलता की ओर झुकी यह भाषा अर्थ गांम्भीर्य तथा लालित्य से युक्त हैं।

अंचल को अनेक भाषाओं पर सहज अधिकार था। हिन्दी, संस्कृत, उर्दु, अग्रेंजी पर उनका समानाधिकार था। किन्तु उन्होंने अपनी भावनाओं को सदैव हिन्दी भाषा द्वारा ही प्रस्तुत किया उर्दु, फारसी, अरबी शब्द — फरिश्ता, अफसाना तालिम, जज्बे, मुमकिन मरहूम, मोहताज, सितम, नजर, दिलदार, जिगर, जनाजा, मुफलिस, सैलाब, मंजिल, बसेरा, शरारा, तहखाना, इत्यादि। ग्रामीण शब्द– पनिहारिन, अटारी, पुरवा आदि। **अंग्रेजी शब्द** — अफसर, क्वाटर, मोटर, मील, सिविल लाईन्स, इन्जन, रोड, ट्रेन, बस इत्यादि।

कवि की भाषा हमेशा भावानुकूल रही है। इस दृष्टि से 'अचल' 'की पावस की संध्या', 'कवि का स्वप्न', 'अपनी बात', 'ईमान', 'ओ विजयिनी आलोकमयी' इत्यादि कविताएँ उल्लेखनीय है।

Scanned with CamScanner

अलंकार — विधान

अंचल जी की कविता में अधंकारो का बाहुल्य नही है। उपमा और अनुपास की अधिकता हैं। रुपक कही—कही मिलता हैं। रुपक अलंकार में उपमेय और उपमान में अभिन्नता स्थापित की जाती हैं। यह किसी कार्य, भाव या वस्तु के एक ही अवयव पर आरोपित होती हैं। अंचल के काव्य में सांग रुपकों का अधिक प्रयोग हुआ हैं।

डॉ. विनयमोहन शर्मा के मतानुसार — अंचल की कविताओं में अलंकारों की खोज करनी भी नहीं चाहिए। वे भावों के सुष्टा है, भावनाओं के वेग में कल्पना जगत में विवरण कर अपनी अतृप्त वासना (वासना का प्रयोग व्यापक अर्थ में) के साथ अन्तर्द्वद करते हैं, द्वंद में अलंकारों की झनझनाहट के लिए अवकाश नही है। उनकी कल्पना परी प्रकृति के आंगन में खड़ी होकर अपना सिंगार संभालते समय केवल साम्य भर देख सकी हैं। अत: साम्य सूचक अलंकार ही इस कवि की रचना अधिक दिख पडतें हैं।"[८] साम्य मुलक अलंकारों में उपमा का प्रमुख स्थान है इसमें रुप, गुण या भाव के आधर पर उपमेय की उपमान से समता की जाती हैं। भाव सामय के आधार पर कवि इन पंक्तियों में अपनी विव्हलता का वर्णन कर रहा हैं।....

उदा. — "ज्यों करील के मरु निकुंज में
उमड़—घुमड़ घन घिरते
वैसे ये उन्माद प्रपीड़ित
प्राण तृषातुर रोते।"[९]
"निर्झन से झरते सजल नयन
इनमें नित बसता है सावन।"[१०]

इन पंक्तियों में सजल नेत्रों की उपमा निर्झर से दी गयी हैं। 'सावन के बसने' ने सोने पर सुहागे का कार्य किया हैं।

अंचल के काव्य में प्रतीक योजना —

प्रत्येक युग के कवियों का प्रतीक विधान अपना खुद की विशेषता लिए होता है। वह उस युग की साहित्यिक और सांस्कृतिक परम्पराओं का प्रतिनिधिक होता है। साथ ही कवि की निजी प्रतीक सृष्टि उसकी मन: स्थिती, विचारधारा, रुचि, संस्कार और स्तरीयता की द्योतक होती हैं। अंचल स्वच्छन्दतावादी धारा के प्रतिनिधि कवि है। उनके प्रतीक विधान में सहजानुभूति और संवेदना लक्षित होती है। 'अंचल' जी मानव मन की सहज स्थितियों के कवि है, और सहजानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए भाषा के प्रचलित सांचे पर्याप्त नहीं होते। अत: कवि प्रतीकों का सहारा लेता हैं। 'अचल' जी अन्तर्मुखी संवेदन के कवि है इसीलिए प्रकृति के प्रति गहरा आकर्षण उनमें हैं, अतएव आत्मेतर, वस्तु जगत के साथ अपनी आत्मानुभूति का तालमेल बैठाने के प्रयास में उन्हें प्रतीकों का आश्रय लेना पड़ता था। 'अंचल' जी अपनी निजी मन:स्थितीयों की सूक्ष्मतिसूक्ष्म अभिव्यक्ति का आग्रह उनके प्रतीक प्रयोग में दृष्टिगोचर होता हैं। ' अंचल' जी अनुभूति की आवृत्ति के कवि है। एक ही अन्तवर्ती भाव उनके काव्य को आक्रांत किये हुए हैं — वह है अतृप्ति। इसी की बार—बार अभिव्यक्ति वे करते है। 'अंचल' मानों पारदर्शिता और अभिव्यक्ति के गुलाबीपन के समर्थ हैं।"[११] कल्पना की चमत्कार—सृष्टि 'अंचल' के काव्य रचना का उद्देश्य नहीं था। उनकी प्रतीक योजना निर्दोष, भावप्रबलता और अनुभूति सघनता से सम्प्रेरिज है। अंचल के काव्य में परम्परागत प्रतीक में जोगी, धुनी, महायात्रा, दीपक, सोम—श्रृंगार, बटोह आदि दिखाई देते हैं। तो—भावनात्मक प्रतीकों में 'अंचल' जी पर छायावादी प्रतीक योजना का गहरा प्रभाव देते हैं। दीपक, बादल आदि प्रतीक बारं—बार उनकी अभिव्यक्ति में लौटते हैं। दीपक मन की उज्चलता का, शाश्वतता का, उदम्य जीवनाकांक्षा का प्रतीक हैं।

जैसे—

अ) मैं थकी जलाकर बार—बार, मेरा दीपक बुझ जाता हैं।[१२]
आ) दीप से और स्नेह से जैसे विलम होती न बाती।[१३]
इ) तुम जलते दीपक की लौ हो — जिसने जलने में सुख मान।[१४]

बादल को कामावेग के प्रतीक रुप में भी व्यवहत किया है।

जैसे —

अ) दिशि— दिशि से उमड़ा सोमपात ....[१५]
आ) धिर—धिर आते रस—चपल मेघ ....[१६]

बादल को विविध वर्ष विविध अर्थों को घोतक करते हैं।

Scanned with CamScanner

जैसे – अ) दु:ख के काल बामल पर सुख की चाँदी की रेखा।[१७]
आ) घिर आये दुर्वार क्षितिज में रोते रक्त भरे बादल।[१८]

रात, तरी, मांझी, सागर, आकाश, हलाहल, मधुव्रती, कमल, कांटा, फुल, मधुमांस, वर्षा, ज्वाला, आदि अंचल के प्रिय प्रतीक हैं। क्षितिज को भी प्रतीक रुप में प्रयोग कर कवि ने परम्परागत अर्थ की पुष्टि की हैं।

रात	–	यह वर्षा की रैन अँधेरी नीले काजल की ज्वाला..... **अपराजिता – पृष्ठ – ३३**
तरी	–	फेकों बीच भँवर में तरणी – अपराजिता – पृष्ठ – ७
आकाश	–	हाथ – सा ऊपर उठाकर व्योम ने जब जब बुलाया – **आधुनिक कवि पृष्ठ – ७**
हलाहल	–	पी गया जाने न कितने मैं हलाहल के गवण्डर – **अपराजिता – पृष्ठ – ३६**
मधुवती	–	आज ओरे मधुवती – **अपराजिता – पृष्ठ – ३७**
कमल	–	मूर्छित कमल आलेक रोता – **अपराजिता – पृष्ठ – ६८**
कांटा	–	कविता "कांटा–पुजारिन से" देखिए – **वर्षान्त के बादल** – पृष्ठ – ४६
फुल	–	यदि फूल नहीं बो सकते, तो कांटे कम से कम मत बोओ – **आधुनिक कवि – पृष्ठ – ५६.**
वर्षा	–	हरिचुनर पहनकर आ गई वर्षा सोहागिन फिर – अंचल समग्र **वर्षा – गीत – पृष्ठ – १८७**
ज्वाला	–	स्वप्न में भी जो न होती शान्त वह जलन हैं – **अंचल समग्र – मेरी जलन – पृष्ठ ७ १८०.**
क्षितिज	–	फिर विकल हूँ कौन बोलो तो क्षितिज के पार रहता। **अपराजिता – पृष्ठ – ६**
सागर पक्षी	–	**आधुनिक कवि – पृष्ठ – १६**
झरना	–	**आधुनिक कवि – पृष्ठ – १२**
तूफान	–	देखिए 'तूफान' और 'अंधड़' कविताएँ अपराजिता पृष्ठ – ४४–५४.

फारसी से गृहीत प्रतीक में हाला, प्याला, साकी, मधु–मदिस आदि से संबंधित प्रतीकों का भी प्रयोग अंचल के काव्य में मिलता हैं।

अंचल जी के काव्य का निम्नांकित प्रकार के प्रतीकों के आधार पर हम अध्ययन करेंगे –

१) यौन प्रतीक (फ्रायड़ का प्रभाव) –

अंचल को मांसल कवि माना गाया हैं। मधूलिका और अपराजिता इन दोनों काव्य संग्रह में 'अंचल' ने यौवन का उन्माद अपने गीतों में रचा हैं। किन्तु बाद में अचानक सब कुछ बदलने से 'अंचल' अपनी प्रियतमा को स्वप्न लोक में मिलने लगे। इसलिए कुंठित यौन अच्छाएँ गीतो में व्यक्त होने लगी। इसमें फ्रायड के 'स्वप्न प्रतीक' का स्पष्ट प्रभाव हैं। "अंचल" ने प्रकृति व प्रियतमा की क्रिया को यौन–प्रतीक के रुप में प्रयुक्त किया हैं। "आज तो....." इस गीत में सीप औ सिन्धु प्रतीक के माध्यमसे प्रणय–पिपिसा को अंचल जी ने बताया हैं–

उदा . – "आज सखी ही मधु आया है केशर की गलियों में
आलि अब मैं क्या करुँ सीप में सिन्धु उमडता आता।"

प्रणय–पिपासा की तीव्र भावना का इसमें वर्णन हैं।

"अंचल जी" ने अपने संपूर्ण काव्य संसार में अतृप्त–मिलन की प्यास, पिपासा उभर–उभर कर सामने आती हैं। आतरकि यौवन भावना –

Scanned with CamScanner

"भुलना मुझको न प्रियतम" इस गीत में इस प्रकार मुखरित हुई हैं।

उदा. "पास बैठी थी लिए तुम शून्य आधी–सी पिपासा
उड़ प्रखर परिमल रहा था कुन्तलों से लालसा
मुक्त केशों में शमा–सी जल रही थी रुप खाले,
आज जीवन ज्वार में सोये सभी तूफान बोले,
भुलना मुझको न प्रियतम।"

प्रियतमा के यादों के दंश अंचल के आंतरिक प्रणय–पिपासा के बार–बार उकसाते हैं –
मधुमास प्रियजन, के लिए विरह–वेदना लेकर आता हैं – "अंचन" ने इस मधुगीत में लगभग सभी रंगों का वर्णन किया है प्रतीक के रुप में–

उदा. पीले मधुकणों से भर गई छाती पवन की।
स्वर्ण कलशों में सजल केश्ज्ञल लिए चम्पापरी–सी।
नीले पुलको में तरंगित चित्र लेखा बन गई छवि।
दूर तक सहकार श्यामल रेणुका से चिर चला कवि।

ऐसे में अंचल के मन के भाव और क्या हो सकते हैं –

उदा. "अनमने फागुन – दिवस ये हो रहे है प्राण कैसे
आज सन्ध्या से प्रथम ही भर चला मन लाल सा से
आज आधी सा प्रखर है वेग पिक की काकली में
एक अंगूरी पीपासा मुक्त अंगो की गली में।
आज है मधुमास रे मन।

'अंचल' ने प्रकृति की विभिन्न छटाओं का अपने मन की भावना व्यक्त करने के लिए यौन प्रतीक के रुप में उपयोग किया हैं।

पौराणिक प्रतीक –

'अंचल' ने पुराख्यानों द्वारा आधुनिक संदर्भो और मन:स्थितियों को व्याख्यातिक किया है। भारतीय संस्कृति, इतिहास में गहरी आस्था ने अंचल के पौराणिक पात्रों में आधुनिक भाव–बोध के गुण दिखाई दिये। पौराणिक पात्रों का आज के समामायिक महत्व पर प्रतीक के रुप में अंचल ने कुशलतापूर्वक उपयोग किया हैं।

"अंचल" जी के पाँच खण्डकाव्य पौराणिक प्रतीक को सशक्तता से व्यक्त करते हैं।

"शीलजयी" में सम्राट अशोक को एक महामानव की अभिलाषा का प्रतीक व उसके द्वारा मानवीय भावनाओं का वर्गीकरण सुंदरता से किया है। एक सम्राट संहार से कैसे "साधु" बनता है। जीवन में सहज, सत्य का यह सुंदर प्रतीक है। सम्राट के रुप मे और साधारण् रुप में भी महान अशोक मानवीमत के विजय का प्रतीक हैं।

उदा. "जान पड़ती है मुझे छाया, प्रलग की यह विजय
भस्म होती जिस शिखा में भूल–शलभ सीनावकर
पर न भरती है क्षमा की ज्योति जगती में कभी
विश्व–मंगल की विमल सद्वृत्ति केवल है अमर"

"त्यागपथी" ख़ंडकाव्य में अंचल ने हर्षवर्धन को एक देशभक्त, लोककल्याणकारी, त्यागमय जीवन का उच्च प्रतीक के रुप में प्रस्तुत किया है। जो आज भी अखिल जगत के मानव समाज के लिए महानता के प्रतीक हैं–

उदा. "शांति, मंगल का व्रती था हर्ष का शासन
था लिए जिसने प्रजा हित राजसिंहासन
भी सकल साम्राज्य में सुख श्री उमड़ आई
थी चतुर्दिक न्याय–समता की विभाछाई।"

Scanned with CamScanner

"ज्योति—पुरुष" समाज के उस 'विद्रोही' मन:स्थिति का प्रतीक है। तो अन्याय, असमानता, से लड़ता आया धार्मिक आडंबरों, जमीनदारों के जुल्म को जिसने अपनी सीधी—साधी सरल भाषा से ललकारा। जिसका हर शब्द जन—सामान्य की भावना का ज्वलंत प्रतीक बना। कबीर हमारे समाज के मार्गदर्शक के प्रमुख प्रतीक है। ऐसे ज्योतिपुरुष को 'अंचल' ने प्रतीक मानकर उनकी महानता को आज के संदर्भ में जोड़ा है यह बड़ी बात है क्योंकी कबीर के विचार आज भी प्रतीक है जीवन्तता के, जागरण के क्रांति के। आज के शासकों के खिलाफ सामान्य जन के विचारों का प्रतीक है कबीर —

"अन्याय यह मिट कर रहेगा धर्म और समाज से
क्या मिल सकेगा अन्ध पूजा, दंभपूर्ण नगाज से?
मन में भरा है खोट, तृष्णा रोज होती तीव्रतर,
घर भर रहे हो, पेट तुम भोली प्रजा का काटकर।"

"अपराजिता" खण्डकाव्य में अंचल जी ने मानवीय मन:स्थिती को लेकर पौराणिक पात्रों के माध्यम से आधुनिक स्थिती का संबंध जोडा है। मनुष्य के अंदर की भाग, लोभ, द्वेष भावनाएँ हर काल में समान रही हैं। अन्याय के विरुध्द प्रतिशोध की भावना से सुलग उठनेवाली नारी किस तरह इतिहास बदल सकती है। नारी का दमन, नारी पर अत्याचार राष्ट्र के लिए किस तरह घातक है। इसका वर्णन "अम्बा" को प्रतीक मानकर "अंचल" ने किया है। "अम्बा" प्रतीक है आज के नारी समाज के भावनाओं का ने वह प्रेरणा है कि अन्याय जुम्ल को कभी सहना नहीं चाहिए —

"अपेक्षित याचिका होती विषदग्धा ध्वंस तत्पर जब,
न रुकता वेग उसके द्रोह का अभिशाप्त झंझानल।
महा उद्दाम, अनियंत्रित, विदारक अंध होता हैं,
उसी करुणामयी का प्रज्वालित प्रतिशोध—दावानल।"
नारी शक्ति का यह रुप हमारी आदि शक्ति के रुप का प्रतीक हैं।

ध्रुवान्तर —

"अंचल" जी का नवीनतम खण्डकाव्य हैं। यह अंचल जी का अंतिम और पाँचवा खण्डकाव्य हैं। जिसमें महाभारत में स्वर्गारोहण पर्व का कथानक लेकर पाँचो—पांडवों, द्रौपदी और अभिशप्त अश्वत्थामा के मुख से उद्‌भुत मानवीय करुणा के बहुरुनी उद्वेलन को रेखांकित किया गया हैं।

निष्कर्षात — यह कहा जा सकता है कि अंचल जी प्रतिकधर्मी कवि है। किसी वाद विशष के जुडने के लिए नही बल्कि पाठक से सामान्य रुप से संवाद स्थापित करने अंचल ने प्रतीक को अपनाया।

बिम्ब — विधान —

बिम्ब याने छाया जिसे दर्पण में हम देख सकते है। किन्तु काव्य साहित्य के बिम्ब हम किसी सत्य के आन्तरिक भाव को देखते हैं। बिम्ब—निर्माण कह प्रक्रिया भावावेश पूर्ण क्षण की लगभग अर्ध्दचेतन अवस्था में संपन्न होने वाली प्रक्रिया हैं। जिसकी पुनरावृत्ति जीवन में असम्बध्द होती हैं, जो कवि के स्वयंप्रकाश ज्ञान के स्वयंप्रकाश ज्ञान की स्थिती है। बिम्ब केवल वस्तु का प्रतिबिम्ब ही नहीं प्रस्तुत करता अपितु यह कवि की किसी विशेष मनोदशा और दृष्टिकोण को भी सूचित करता हैं। काव्यगत बिम्ब स्वयं मानव—मन का ही दूसरा नाम है जो प्रत्येक चेतन अथवा अचेतन वस्तु के साथ अपने संबंध की घोषणा करता हैं। काव्यगत बिम्ब ऐन्द्रिक गुणों से अनिवार्य रुप से समन्वित और मानवीय —अनुभूतियों से युक्त, निर्जीव पदार्थो मे भी आत्मा का दर्शन कराने वाला शक्तिशाली शब्द चित्र हैं। कवि प्रतिभा की सच्ची कसौटी उसके काव्यगत बिम्बो की नवीनता हैं। अंचल ऐन्द्रिक संवेदना के कवि हैं। उनका बिम्बा —विधान सशक्त, सटीक और सहज है। काव्य में अनुभूति के यथार्थ चित्रण को प्रधानता देने के कारण तथा अभिव्यक्ति की मानव सुलभ तृष्णा की तीव्रता के कारण अंचल की बिम्ब निर्माण —कला पर एक ओर छायावादी शैली का गहरा प्रभाव पड़ा हैं तो दूसरी ओर मौलिक प्रतिभा भी है। प्रारंभ में वैचित्र्य—मोह और कवि प्रतिंभा के प्रदर्शन की लालसा में उन्होंने अति काल्पनिक चित्र प्रस्तुत किये। ततूपश्चात कुछ समय के बाद अपनी दुर्बलता को पहचान कर अंचल ने अनुभूति की सघनत को महत्व दिया। मधुलिका में कई जगह कल्पना की प्रधानत हैं और अनुभूति की कमी हैं उसके बाद की रचना अपराजिता में अनुभूति की प्रधानताप दिखाई देती है। परवर्ती रचनाओं में यह क्षमता अधिक विकसित दिखाई पड़ती हैं।

मौलिक दृष्टि से अंचल के काव्य में शब्द, बिम्ब, वर्ण—बिम्ब, सामानुभूतिक —बिम्ब (Empathuic Image) व्यंजना प्रवण — सामाजिक बित्ब और असंवेष्टित या प्रसृत बिम्बों का अधिक मात्रा में प्रयोग है। शब्द—बिम्ब औन असंवेष्टित या प्रसृत बिम्बों का अधिक मात्रा में प्रयोग है। शब्द—बिम्ब —अभिव्यक्ति —सांक्षेप्य और कला चेतना से युक्त,

Scanned with CamScanner

मूर्त विधान का सर्वोत्तम रुप होता है। शब्द बिम्ब उसे कहा जाता है जिसमें एक शब्द को अर्थ गर्भ–प्रेषणीयता से अति भाराक्रान्त कर किसी संदर्भ में इस प्रकार योजित किया जाता है किसी शब्द के अर्थतिशय से संपूर्ण चतत्कृत हो जाता है–

उदा. "चुप रहो वन पंखियों की रुप गंधी ओ हवा।
आज जो कुछ भी नही कोई नही हैं– चुप रहो
चुप रहो अनुगूंजते ओ शंखवर्षी बादलों गुनगुनाती ओ गुफरओ कन्दराओ चुप रहा।"[१९]

उपरोक्त पंक्तियों में एक ही शब्द 'चुपरहो' को अर्थ से अति भाराक्रान्त कर उसकी चार बार आवृत्ति की है जिससे कवि की अन्यमनस्कता और उब को व्यक्त किया गया है। शब्दाश्रित बिम्ब विधान दो प्रकार के होते हैं। भाव–बिम्ब और ध्वनि –बिम्ब।

ध्वनि–बिम्ब भाव बिम्ब की तुलना मे अधिक कलात्मक होता हैं। वृक्ष शब्द से डाल, फुल, पत्ते, फल और झुरमुट का बोध भाव–बिम्ब हैं किंतु 'वृक्ष' शब्द ही से ऊँचाई, विस्तार, तथा कुल्हाडी चलाने वाले तक को भी छाया देने का बोध ध्वनि–बिम्ब हैं।

अंचल न समानुभुतिक–बिम्बो का भी खूब प्रयोग किया है। समानुभूति की दशा में दृष्टा और दृश्य एक हो जाते हैं। आश्रय और आल्मबन भाव–सघन होकर एक ही मानसिक धरातल पर आ जाते है। समानुभूतिक बिम्ब में संवेदनशील और इन्द्रिय ग्राह्य चित्रणशीलता हैं। अर्थात् कवि अपने अहम्, बोध, मन:स्थिति –क्रिया व्यापार, शारीरिक चेतना–संचरण या अन्वतृर्त्ति का आरोप आत्मेतर दृश्य जगत पर करता है। ऐन्द्रिक संवेदनों के चतुर चितेरे एवं व्यक्तिवादी कवि होने के नाते अंचल ने समानुभूतिक का प्रयोग बहुत किया हैं –

उदा. – "शोख हो जाती रवानी आंधियो के अंजूमन में
आग लग जाती इन्हीं मृदू मारिकाओं के बदन में
एक उठती आँच में धू–धू सुलग उठते तलातल
प्यास जीवन की उमड़ती खून चल जाता गगन में।"[२०]

उपरोक्त पंक्तियों में आग लगना, उमड़ना, खूब चलना, शेष होना, इत्यादि क्रियाओं का मानवेतर वस्तुओं पर आरोपण है और यह सारा का सारा एक विशेष वातावरण् की सृष्टि के लिए किया गया हैं जिससे कवि मन:स्थिति रचना में हूबहू ढल सके। इसमें कवि सफल हुआ हैं। अपने मन में उमड़ते क्रंदन, अशेष प्यास और जलन को उसने निम्नांकित पंक्तियों में बिम्बित किया हैं –

उदा. – "शशि किरणें चूम चली जाती, कुछ हँसती कुछ आहे भरती
चिर तृप्ति कहाँ? कहता जैसे सन सन् रव में उन्मत्त पवन
चीत्कार कपोतों का झंकृत करता रहता रजनी निर्जन।"[२१]

प्रकृति के विविध प्रत्ययों पर मानवीय क्रिया व्यापार का आरोपण कर कवि न अपने भीतर की उदासी को जैसे चारों और फैला दिया हैं। इस तरह के अनेकों प्रयोग अंचल ने किये हैं तथा 'शासदी संध्या' को कवि–मन की शोक–विषण्ण स्थिति जोड़ने के लिये उसे अंतिम क्षणों के रुपक में बाँध दिया हैं –

उदा. "पीत रुग्ण शारदी संध्या
जो शिथिललेटी दिवा की तृत्यु शैया पर
दूर सरि तट पर कहीं गायी गयी लोरी सदृश्य निरतेज
फीकी–प्राण वंचित।"[२२]

अंचल जी कभी–कभी वातावरण की रुपाकृति और झंकृति का सम्पूर्णता में समाविष्ट विवरण् देते समय संकेत ग्राही–चाझुण–बिम्ब प्रयोग करते हैं–

उदा. – "कुछ नील नसों के जालों में जब हूक उठाती दोपहरी
जब धु–धु करंती थी संख्या कुछ गाती थी रजनी गहरी
उफनाते टूटे तारे जब आव्हान निधन कर लाते थे –
मेघों के रन्ध्रों में जल–जल झांका करते उसके प्रहरी
था बिध्द किये देत पंजर–पंजर हुँकारों का जमघट
धुनी सी मस्तक पर जलती, विष की वंशी से क्षुब्ध अधर।"[२३]

Scanned with CamScanner

VOLUME - 6| ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

इन पंक्तियों में विविध–विवरणों– कार्य प्रवधियों और वस्तुओं का ध्वनयात्मक विवरण कवि की क्षुब्ध–जलती–आक्रोश भरी मन:स्थिति का संपूर्ण समन्वित चित्र दिया गया हैं। चाक्षुष बित्वों का अधिक प्रयोग अंचल के सूक्ष्म निरीक्षण का परिचायक हैं। श्रावण और घ्राणिक बिम्बों का प्रयोग अपेक्षाकृत कम मिलता है या कहीं कहीं उपकरण मूलक चतुष्क चाक्षुष बिम्ब प्रयोग से परिगणनात्मक विवरण भी मिलता हैं –

अ) "आज बिलोल भरी बुलबुल
श्यामा की वंशी बोली
सकुन सलज बल्लरियाँ सिहरीं
भर विहंगो की झोली।"

आ) "फेरी देते इसी डगर पर
कितने प्रखर बसंत सखी
कितनी नीर जलद बरसाते
कितने शिशिर ज्वलंत सखी"

– (मधूलिका – 'सखि')

उपरोक्त पंक्तियों में परिगणनात्मक शैली अधिक मुखरहुई हैं। वर्ण परिज्ञान, बिम्ब विधान की दृष्टि से काव्य–कला के लिए वर्ण बोध महत्वपूर्ण हैं। कारण रंगबोध की बारीकी से बिम्बों में ऐन्द्रियता और कलात्मक सौष्ठव आता है। इस दृष्टि से अंचल में वर्ण आसक्ति झलकती है किन्तु कालान्तर में वे हल्के छायादार रंगो के प्रयोग द्वारा वातावरण और भावना की पार्श्वभुमि को व्यंजित करता हूँ। मेरी आरंभिक कविताओं में गहरें रंगो के प्रति आसक्ति जरुर है पर इधर वर्षो से मैं उस मोह को छोड़ चुका हुँ।"[२४] भावों में पारदर्शिता और अभिव्यक्ति में गुलाबीपन अंचल की विशेषता हैं और स्मृतियों की छुपछांही झलकियों को कविता में बांधने के लिए रंगो का संगत प्रयोग जरुरी हैं– "आलोचकों द्वारा मुझे 'स्मृतियों का गायक' कह कह पुकारे जाने का एक कारण मेरे काव्य पर हल्के रंगो की छाँहो का आवरण हैं।"[२५] मृत्यू बिम्ब को गहराने के लिए अंचल परम्पारिक नीले वर्ग का प्रयोग करते हैं –

उदा. "नीला यह आकाश धरा के विष से अपना गात निखारे
नीली लहरों की पगडण्डी बनती मिटती सांझ सकारे।"[२६]

बरसाती–बादल, गीले बरसाती दिन की उदासी को व्यक्त करने के लिये वही नीला रंग सांवला हो गया

उदा. – "पानी भरे घन काले मेद्यों में डुब गया है अम्बर
पानी–रंगी सांवली सूनी सड़कों पर अजब उदासी।"[२७]

मेघ या घटा काम वासना का भी प्रतीक है। कामवेग की हल्की बूदों को व्यक्त करने के लिए भी कवि ने इसी नीले रंग का प्रयोग किया है –

उदा. श्यामल पुलकों में लुक छिप कर
उल्लास भरी, वह रही रात।"[२८]

लाल रंग क्रांति सूचक के लिये प्रयोग किया है और यही लाल रंग मधु के गुलाबीपन मे हलकर कवि के यौवनावेग, मांसल ऐन्द्रिक संवेदनों को भी मूर्त करती है वही लाल रंग प्रेयसी का सुहाग भी है। उज्ज्वल श्वेत रंग भी अंचल की अभिव्यक्ति हे प्रमुख भुमिका संपन्न करता है। कवि ने सर्वन्न प्रेयसी के रुप बिम्ब के लिए चांदनी, क्षेपक, किरण और बिजली आदि प्रतीक चुने हैं। पीला रंग कही 'नये धान की' स्वर्णिम झलक के रुप में आया है कही मरणोन्मुखी शारदी संख्या की निर्जीव पीताभ के रुप में हरा रंग समृध्दि का, शांति का प्रतीक हैं।

इस प्रकमार कवि सौंदर्य बोध से संबंधित सभी श्रेष्ठतायें और विकृतियाँ उसके बिम्ब–विधान में परिलक्षित होती हैं। बिम्ब योजना द्वारा कवि केवल वस्तु–विशेष का मानसिक पुन: प्रत्यक्षिकरण ही नहीं करता बल्कि उसे किसी प्रगाढ़ अनुभूति के संदर्भ में लाकर सम्प्रेषणीय बना देता हैं।

Scanned with CamScanner

छंद—विधान —

अंचल जी की कीर्ति एवं प्रसिध्दि का प्रमुख आधार उनके गीत हैं। उन्होंने खण्डकाव्य की रचना करके भी भावापूर्ण मधुर गीतों की रचना की हैं। अंचल ने विभिन्न छंदो का आश्रय लेकर काव्य का सृजन किया है परंतू उनके गिता का प्रमुख आधार लय है। गीतों का तुकान्त होना जरुरी है वर्ना गीत मे संगीतात्मकता अवतरित नहीं हो सकती। 'मधुलिका' और 'अपराजिता' में अंचल जी ने मुक्तकों का अधिक प्रयोग किया है। मुफ्तक की रचना फारसी छंद 'रुबाई' के आधार पर हुई है। 'रुबाई' में आठ पंक्तियाँ होती हैं क्योंकि इस्लामी काव्य में दो पंक्तियों को एक इकाई माना जाता हैं। जो पदों की रचना कसी है। इसमें पहली, दूसरी और चौथी पंक्तियों का तुकान्त होना आवश्यक है लेकिन बहुधा तृतीय पंक्ति की भी तुक मिल जाती है जबकि मुक्तक में चार ही पंक्तियाँ होती है और इनमें दूसरी तथा चौथी पंक्ति का तुकान्त होना आवश्यक हैं। 'रुबाई' और 'मुक्तक' का मूल—भाव, सार, व्यंग्य अथवा सौंदर्य अंतिम में निहित रहता है। मुकत—छंद का प्रयोग अंचल के परवर्ती काव्य में अधिक मिलता है। अंचल मूलत: कवि है, उन्होंने अपने गीतों व काव्यों की रचना किसी लोकगीत की धुन के आधार पर नही की है, उनके गीत सहज एवं स्वत: प्रस्फुरित कवि के उद्गार है। उनके छंद स्वयंमेव, अनायास, अवतरित स्वछंद छंद हैं।

काव्यकला की सामान्य विशेषताएँ —

छायावाद युग की समाप्ति के अनन्तर साहित्य में नवीन प्रवृत्तियों का उदय हुआ और हिन्दी कविता ने प्रथम बार भावात्मक रुप के साथ बौध्दिकता की भूमि में प्रवेश किया। साहित्य का संबंध जीवन जटिलताओं से जुड़ा। नयी शक्तियों ने राष्ट्रीय कविता को नया आवरण प्रदान किया। समाजवादी आदर्शो, विचारों और सिध्दांतों ने राष्ट्रीयता को और भी व्यापक तथा ठोस रुप में प्रस्तुत किया। गांधीवाद के आदर्श भी इस युग में प्रभावशील रहे। प्राचीन भारतीय संस्कृति के स्वर भी इस युग में गुंजते रहे। अग्रेंजी सम्राज्यवाद और — आतंकवादी प्रवृत्तियों के विरोध के स्वर भी प्रगतिशील कविता में प्राप्त होते हैं। गांधीवादी दर्शन से प्रभावित विचारधारा में बलिदान और अहिंसा के स्वरों की प्रधानता थी। इस युग में समाजवादी और मार्क्सवादी आदर्शो की भूमिका भी पनपी। एक अन्य विचारधारा क्रांति का वेग लेकर तेजी से प्रवाहित हुई। प्रगतिशील कवि क्रांति का आव्हान और अभिनंदन कर महानाश और प्रलय को आमंत्रित करते है। अंचल के काव्य में छायावादोत्तर काव्य की अनेक प्रवृत्तियों का सशक्त स्वरुप ढूँढा जा सकता है।

अंचल के काव्य का प्रमुख स्वर प्रणय हैं। उनके प्रत्येक काव्य—संग्रह में यह स्वर मुखरित मिलता है। मूलत:अंचल प्रणय के ही गायक थे। प्रथम काव्य संग्रह 'मधूलिका' से लेकर 'अनुपूर्वा' तक अंचल की प्रणयभिव्यक्ति, प्रेम, उन्माद, अतृप्ति, तृष्णा, रुप—सौंदर्य, मिलन की इच्छा, मिलन, विरह, आदि विविध रुपों में काव्यगध्द हुई है। कहीं प्रणय की स्थूल अभिव्यक्ति है, कहीं छायावादी प्रणयिनी की काल्पनिक मूर्ति की तरह और कही क्रांतिकारिणी के रुप में। वस्तुत: अंचल की कीर्ति—कौमुदी के प्रसार का श्रेय उनकी प्रणय संबंधी कविताओं को ही हैं।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि 'अंचल' का काव्य साहित्य् शिल्प, शैल्प, शैली, भाषा, बिम्ब व प्रतीक, अलंकार, छंद की दृष्टि से हिन्दी—साहित्य के लिए हमेशा भूषण रहेंगें। अपने जीवन के अस्सी वर्ष में भी प्रणय को प्रेरणा मान उस प्रिगतमा के लिए कितने निश्चल, सुंदर प्रतीक की योजना अंचल करते हैं — "तुम एक अनल कण सी उज्ज्वल, बजती शहनाई सी चंचल" (यह अमानिशा की भरी सांझ) "अंचल" जी ने अपने काव्य में विभिन्न विषय, भाषा शैली को अपनाया। सभी में "अंचल" जी संपूर्णता की सीमा पर पहुँचते दिखाई दिये हैं। ऐसे सर्वगुण संपन्न कवि को कुछ समीक्षकों ने मात्र "मांसल कवि" कवि की सीमा में क्यो बाँधकर रख समझ में नही आता। कारण प्यार की बाते कवि खुले दिल से स्वीकार करता है। साथ ही सामान्य जन—जीवन को क्रांति, उद्‌बोधन, संदेश, साहस भी कवि देता है। अपने वैयक्तिक दु:ख से परेशान होकर मात्र दुखड़ा रोने की शैली, भाषा को 'अंचल' ने नही अपनायी। दु:ख से जूढकर नवनिर्माण की बात वह कहते हैं। कितना भी कठीन समय क्यों न हो उसका सुखद अंत होना ही है। किन्तु हमें संकट से कभी—भी घबराना नही चाहिए। "अंचल" की शिल्पशैली, भाषा, बिम्ब, प्रतीक संबंधि यह विशेषता गद्य—साहित्य में भी उतनी ही व्यापक रुप से दिखाई देती है। जो 'अंचल' जी के साहित्यिक—जीवन को परिपूर्ण बनाती है।

"अंचल" जी ने अनेक चमत्कृत शब्दों का सृजन किया है। तथा अनेक शब्दों का पुर्न उल्लेख किया हैं। जैसे — प्यास, तृष्ण, पिपासा, चाँद, रात, तारे, लहर, नारी, रुप, शिखा, दीनशिखा, अमावस, दीपावली, नाम की भी दो कविताएँ हैं। सांझ, शाम की कई कविताएँ है। मगर हर कविता का भाव अलग—अलग हैं। कही—कहीं शब्दों कह अनोखी कारीगरी भी "अंचल" ने दिखायी है।

"किंकणी कंकण छू छमू छनन"

जैसे नादमयी अनोखे शब्दों को भी अंचल ने रचा हैं।
शब्द सामर्थ्य व स्वतंत्र शैली ने "अंचल" जी के साहित्य को एक अनोखी आभा प्रदान की हैं।

Scanned with CamScanner

VOLUME - 6| ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

संदर्भ सूची

१) द्विवेदी युगीन खण्डकाव्य डॉ. सरोजनी अग्रवाल, पृ. ६२.
२) डॉ. रामकुमार वर्मा – साहित्यशास्त्र – पृ. – ६२
३) 'अंचल – आधुनिक कवि – भूमिका – पृ. – १९
४) 'अंचल – आधुनिक कवि – भूमिका – पृ. – ३७
५) अंचल – आधुनिक कवि – पृ. १३
६) अंचल – मधूलिका – साध्य प्रदीप
७) 'अंचल' मधूलिका – 'मेरे गान'
८) अंचल समग्र – देवीकुँवर – पृ. ७६६
९) कुमार संभव भाषा – सातवां सर्ग, संस्करण सातवां संवत् १६८०, पृ. २९
१०) आचार्य विनयमोहन शर्मा – 'अपराजिता' – भूमिका
११) 'अंचल' मधूलिका – 'अन्तर्ध्वनि'
१२) अंचल समग्र – मेरा दीपक – पृ. १९३.
१३) अंचल समग्र – आज मै कुछ अनमनी हूँ – पृ. २०१
१४) अंचल समग्र – दीपशिखा – पृ. – २१३.
१५) अपराजिता – 'अंचल' – पृ. ७५.
१६) अपराजिता – 'अंचल' – पृ. – ७४
१७) मधूलिका – अंचल – पृ. ३४
१८) अपराजिता – अंचल – पृ. ६२
१९) अंचल – आधुनिक कवि – पृ. ८६
२०) अंचल – अपराजिता – पृ. १०९
२१) अंचल – अपराजिता – पृ. ११४
२२) अंचल – वर्षान्त के बादल – पृ. ४७
२३) अंचल – अपराजिता – पृ. ५०
२४) 'अंचल' – भुमिका – आधुनिक कवि– पृ. ३७
२५) अंचल – आधुनिक कवि – भूमिका – पृ. ३७
२६) अंचल – अपराजिता – पृ. १०
२७) अंचल – वर्षान्त के बादल – पृ. ७६
२८) अंचल – अपराजिता – पृ. ७६

डॉ. नीता सिंह
हिंदी विभागाध्यक्ष , श्री. बिंझाणी नगर, महाविद्यालय, उमरेड रोड, नागपुर.

Scanned with CamScanner